Junior fellowship 2013-2014

In the field of - THEATRE

Sub field - THEATRE

File Number : CCRT/JF-3/66/2015

PROJECT : FOLK CONTENT IN HABIB TANVIR'S DRAMA

[3rd, 6 month report, Period 1st January, 2017 to 30thjune,2017]

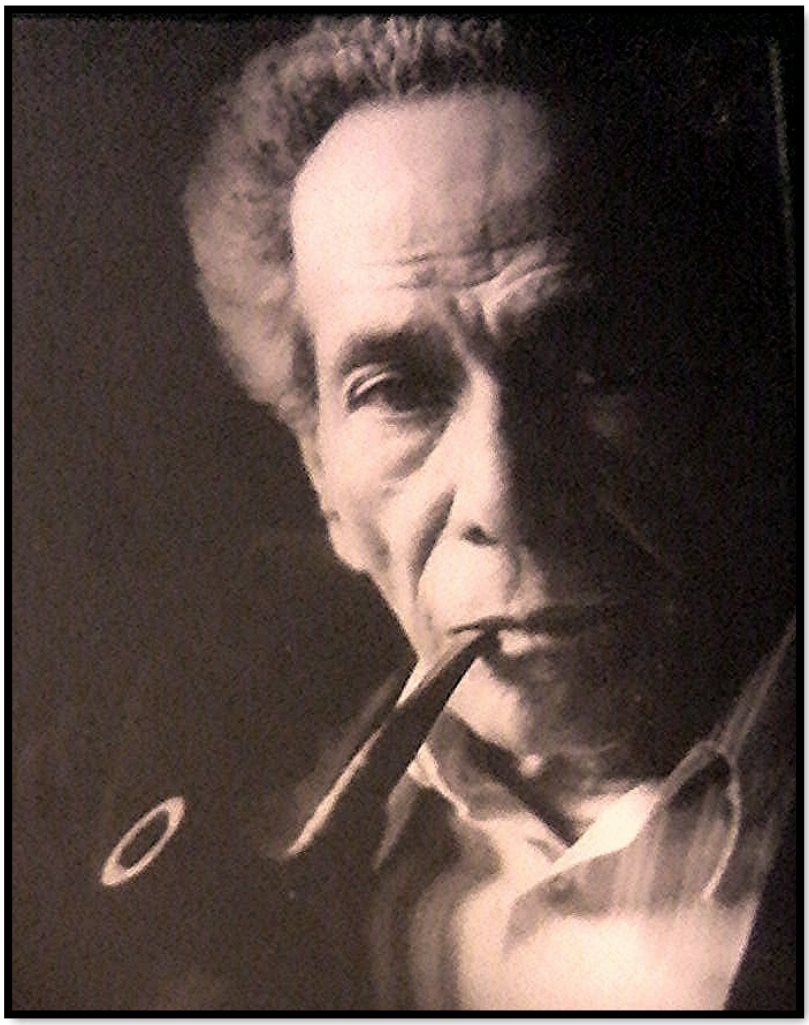

NAME : SANDEEP KUMAR YADAV

ADDRESS : E-1 / 338. VINAY KHAND. GOMTI NAGAR, LUCKNOW 226010, UP, MOBILE NO.+91- 9450661537 Email id: sandyart22@gmail.com

अनुक्रम

1. भूमिका

2. बर्लिन में गुरु डंकन रास से सीखा प्रोडक्शन

3. ब्रेख्त से वास्ता

4. टाइम, स्पेस और एक्शन

5. लोक थिएटर में कहानी को आगे बढाने की परंपरा

6. रस की थ्योरी

7. संस्कृत में कहते है लोक धर्मं, नाट्य धर्म, लोकधर्मी और नाट्य धर्मी

8. हबीब के शुरूआती दिनों का रंगमंच

9. ब्रेख्त के असर का प्रयोग

10. भारतेंदु के सच्चे उत्तराधिकारी हैं हबीब तनवीर

11. कथानक में लोक है और मंच पर अभिनय

12. हबीब साहब ने लोक को ऊपर उठाया

13. मिटटी की गाड़ी' से हबीब तनवीर को विश्वास हो गया की लोक

नाटक की शैली व तकनीकें, संस्कृत नाट्य लेखकों की कृतियों

की नाट्य कला में अंतर्निहित शैली व् तकनीकी से मेल खाती हैं

14. ब्रेख्त और हबीब तनवीर

15. नाटक और रंगमंच का आधुनिक इतिहास नए नए प्रयोगों का इतिहास है

16. संस्कृति का धर्म से गहरा ताल्लुक है

17. नया थिएटर के नाटकों का बैक स्टेज

18. सबसे पहले घरेलू चीजों से ही काम चलाया जाता है

19. हबीब तनवीर के नाटकों में सबसे पहले आता है हैण्ड प्रॉप्स

20. मंच पर सबसे ज्यादा कठिन होता है हाथों का प्रयोग

21. हबीब तनवीर साहब के नाटकों में कॉस्टयूम, सेट लाइट,

22. नाटक राजरक्त का बैक स्टेज

23. हैण्ड प्रॉप्स

24. प्रॉप्स अभिनय का ही हिस्सा

25. हबीब तनवीर के नाटकों में वेशभूषा

26. हबीब तनवीर के नाटकों में सेट

27. नया थिएटर के वरिष्ठ अभिनेता अनूप रंजन पांडे जी कहते हैं-

28. नया थिएटर में वर्तमान में लाइट व सेट की डिज़ाइनर धन्नू लाल सिन्हा कहते हैं

29. नया थिएटर के वर्तमान निदेशक रामचंद्र सिंह कहते हैं

30. नाटक मिटटी की गाड़ी में हबीब जी ने सेट तैयार किया जो की गोल चबूतरा था बस

31. नाटक चरनदास चोर

32. नाटक राजरक्त

33. मेकअप

34. लाइटिंग

35. और अंत में

भूमिका

किसी भी नाटक में बहुत ही महत्वपूर्ण होता है मंच के पीछे का काम | इसमें कोई शक नहीं की मंच पर प्रस्तुत किये जा रहे काम को और अच्छा बनाने में मंच के पीछे काम करने वाली कला बहुत ही महत्वपूर्ण है | बिना पार्श्व मंच के मंच की कल्पना ही नहीं की जा सकती है | किसी भी नाटक की सफलता में मंच के पीछे के काम का बहुत बड़ा योगदान है |

> हमेशा ही मंच के पीछे काम करने के लिए बहुत कम समय रहता है कई बार तो नाटक के मंचन के एक दो दिन पहले या कई बार तो उसी दिन तैयारियां हो रही होती हैं | छोटी नाट्य संस्थाओं में जिनमे पैसे का आभाव है वहां बहुत कम साधनों में ही काम चलाना होता है लेकिन जिनके पास साधन संसाधन अच्छे होते हैं वो बेशक अच्छे से बैक स्टेज के लिए काम करते हैं अब चाहे वो वेशभूषा हो, सेट हो लाइटिंग हो या प्रॉपर्टी सभी में | अब सवाल उठता है की नाटक में कितने कम से कम में काम चलाया जा सकता है , बेशक पार्श्व मंच से ज्यादा मंच पर किया जाने वाला काम महत्वपूर्ण है लेकिन पार्श्व मंच के काम को भी इंकार नहीं किया जा सकता |

अब देखना ये भी है की पार्श्व मंच के काम क्या क्या हैं, किन किन आधार पर तय होगा की कौन से काम मंच से परे के काम हैं| मेरा मानना है की अभिनय के अलावा जो भी है रंगमंच में वो सब पार्श्व ही है | अभिनय घटता तो मंच पर है लेकिन उसके साथ साथ मंच के परे के सभी काम सहयोगी के तौर पर काम कर रहे होते हैं, अर्थात अभिनय सिर्फ अकेला नहीं हैं अभिनय के होने में मंच के सभी सहयोगी तत्व भी अभिनय कर रहे होते हैं, तभी सम्पूर्णता आती है, अगर कलाकार चरित्र से सम्बंधित वेशभूषा नहीं पहनता है तो क्या वो चरित्र लग सकता है, यदि वो दृश्य से सम्बंधित सेट का प्रयोग नहीं करता है तो क्या वो कहानी कह सकता है, यदि वो चरित्र से सम्बंधित मेकअप नहीं करता है तो क्या वो चरित्र लग सकता है | ये सब होने के बावजूद भी अगर मंच पर प्रकाश यानि की लाइट न हो तो सब कुछ किया धरा रह जायेगा | इसलिए सभी कामों की जो भी मंच से परे किये जाते हैं उतनी ही सहभागिता है जितनी की मंच पर हो रहे कामों की | तो इस लिहाज से कहना है की मंच के सामने दिखने में मंच के पीछे किये गए काम का बड़ा सहयोग है, बहुत योगदान है | रंगमंच एक ऐसी कला है जहाँ अभिनेता को ही मंच के परे के कामों को देखना पड़ता है उसे ही सब करना पड़ता है अर्थात इसके लिए कोई अलग से व्यवस्था नहीं होती है |

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट में हम हबीब तनवीर के नाटकों में पार्श्व रंगमंच की चर्चा करेंगे की उनके नाटकों में बैक स्टेज की क्या भूमिका रही है, और सीमित साधनों संसाधनों में कैसे काम किया जाता रहा है ?

<u>बर्लिन में गुरु डंकन रास से सीखा प्रोडक्शन</u>

हबीब तनवीर की गुरु डंकन रास बर्लिन थिएटर से थीं जो प्रोडक्शन सिखाया करती थीं, डंकन रास ने ये कहा की प्रोडक्शन कहते हैं कहानी का कह जाना | ये है प्रोडक्शन | बहुत ही सहज अंदाज़ से | आखिर तक हबीब तनवीर के ज़हन में रह गया था की प्रोडक्शन का मतलब है कहानी का कह जाना | और जो भी तामझाम है वो सब कहानी के अंदर ही है | कहानी कहने में जो जो चीजें बाधा बनें उन्हें तुरंत निकाल देना चाहिए | चाहे वों लिबास ही म्यूजिक हो, सेट हो या लाइटिंग हो | ऐसी जो जो चीजें गैर ज़रूरी लगें, जो बाधा बनें रोड़ा बने दखलंदाज़ी करें उसे निकाल दो | ऐसा हबीब तनवीर की गुरु डंकन रास ने हबीब तनवीर को पढाया था |

गुरु की बात का ही असर था की जब हबीब तनवीर मिट्टी की गाड़ी नाटक करने की तैयारी कर रहे थे तो उस समय तमाम तरह के ख्याल आ रहे थे सेट को लेके लेकिन हुआ वही की जो जो चीजें उन्हें बाधा नज़र आतीं गयी वो वो वो निकालते गए और आखिर में क्या बचा, बचा सिर्फ एक चबूतरा जिसमे कहानी घुमती रहती है | इस चबूतरे वाले

विचार को आते आते उन्हें दो साल लग गए थे |

ब्रेख्त से वास्ता

ब्रेख्त के बारे में 1955 तक हबीब तनवीर कुछ नहीं जानते थे जब वो पहली बार इंग्लैंड गए तो उन्होंने ब्रेख्त को पढ़ा और ब्रेख्त के नाटकों का गहरा असर पड़ा और उसके बाद हबीब ने ब्रेख्त का नाटक कॉकेशियन चक सर्किल देखा, मदर करेज देखा करीब आठ महीने रहने के बाद उन्होंने ब्रेख्त के काम को देखा समझा और जाना |

हबीब को लगता रहा की आर्ट की जितनी भी तारीखे लिखी गयी हैं वो सब मिस्र या यूनान से शुरू होती हैं | लेकिन कभी हिंदुस्तान का, चीन का ईरान का ज़िक्र नहीं आता | तो कभी लगता है की हम लोग गुलाम देश के लोग हैं जो सिर्फ यूनान से सीखने के लिए पैदा हुए हैं हमारा अपना कोई ज़िक्र कला के क्षेत्र में क्यों नहीं आता है| आर्ट यूरोप से शुरू यूरोप पर ख़तम | संस्कृत के नाटक पढने के बाद हबीब तनवीर को लगा की कितना बेहतरीन कला सौन्दर्य हमारा रहा है लेकिन वो पूरे विश्व में क्यों नहीं फ़ैल सका |

टाइम, स्पेस और एक्शन

संस्कृत के नाटक पढने के बाद हबीब तनवीर को लगा की पंडितों ने बहुत सी किताबें लिखी हैं पर किसी ने भी अरस्तु की तीन यूनिटीज के बारे में – टाइम स्पेस और एक्शन की तरफ इशारा नहीं किया | भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में केवल एक यूनिटी रस मौजूद है, तो ये तो बहुत बड़ी बात थी | इसलिए संस्कृत के नाटक हबीब तनवीर को बहुत ज्यादा पसंद आये |

हबीब तनवीर ने तमाम यूनानी और ग्रीक नाटक देखें और पढ़ें और इस नतीजे पर पहुंचे की कहानी बेजोड़ हो शुरू से आखिरी तक और इसका सिलसिला जारी रहे | मिटटी की गाड़ी में विदूषक बसंत सेना के आँगन से गुजरता है और बार बार वही अलफ़ाज़ आते हैं , लेकिन हबीब तनवीर को इसे पढने में मज़ा आता था | ऐसे ही कई दृश्यों में कई संवाद बार बार दोहराए जाते हैं | हबीब तनवीर मानते हैं की इसका ताल्लुक लब्ज़ से कम और दोहराने से ज्यादा है | लेकिन गर आप इस पर गौर करने के लिए बैठ जायेंगे तो आप झमेले में पड जायेंगे|

लोक थिएटर में कहानी को आगे बढाने की परंपरा

हबीब तनवीर ने देखा की अपने लोक थिएटर या देहाती रिवायतों मेंऐसा तत्व नहीं होता है जो ड्रामे की प्रगति को आगे बढ़ाये ऐसी कोई चीज़ नहीं होती | सुधारवादी किस्म की चीज़ ज़रूर है | ब्रेख्त के यहाँ जाक्सटापोजीशन में है एक चीज़ का दूसरी चीज़ में एक मिलाकर पेश करना ताकि कैफियत देखने वाले सुनने के ज़ेहन में पैदा हो और वो खुद अपने नतीजे पर पहुंचे के आखिर हकीक़त क्या है ? हकीक़त को दर्शकों तक पहुँचाना फनकार का काम है | अब तीसरी चीज़ वो है- लोक थिएटर परम्परों का इन्तजाज़ | मैंने देखा जिन्हें रिवायते कहते हैं वो एक जगह जाके टूट जाती हैं | कई सौ साल पहले संस्कृत नाटक खेलना बंद हो गया लेकिन आज भी जो कायम है वो है सिर्फ इलाकाई थिएटर, देहाती रवायतें जो थिएटर उन्ही में हैं उन्हीं में रहेगा |

रस की थ्योरी

रस की थ्योरी का असर गॉव की रवायतों पर भी है | वहां के रंगमंच पर भी है तो फिर उसका नाता मिला है | वो अपनी तमाम बदली हुयी रूप रेखाओं के साथ हम तक जो पंहुचा हैं तो जिंदा है उसमे गुंजाईश है | कल्चर कभी रुका हुआ नहीं होता है इस सिलसिले में बोली की अहमियत है हिंदी और उर्दू की कई शाखाये हैं | कबीर तुलसी मीरा रसखान कबीर ने हमें शब्दवाली दी है लेकिन आज उनकी किताबें यहाँ वहां पड़ी है | इन लोगों ने हमें आवाज़ दी शब्द दिए शब्दावली दी | और ऐसे ही साहित्य से रस मिलता है अच्छे शब्द मिलते हैं जिनका आनदं अलग है और उस आनन्द की रसाभुती अद्भुत है | शब्द से ही रस है रस से ही रसास्वाद है और इसी से आनन्द है |

संस्कृत में कहते है लोक धर्मं, नाट्य धर्म, लोकधर्मी और नाट्य धर्मी

हबीब तनवीर ने जब 1954 में मिटटी की गाड़ी पेश की थी तो पंडितों ने कहा की नाट्यधर्मी को तुमने लोक धर्मी में डाल दिया | हबीब साहब बोले की 'ये तो प्रहसन है, कॉमेडी है, फार्स है, उसमे बहुत से किरदार हैं जो सड़क छाप हैं,

जुवारी हैं, चोर लफंगे और फक्कड़ किस्म के हैं | पंडित कहते हैं की 'नाटक नाट्य धर्म में हैं और आपने उसे लोकधर्म में किया आप छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों को लेकर आये और उनसे करवाया' | उस समय हबीब साहब 6 आदमियों को लेकर आये थे | हबीब साहब कहते थे की यही समस्या नज़ीर अकबराबादी के साथ भी हुयी थी उन्हें भी ऐसे सभी सवालों से गुज़ारना पड़ा था | साहित्य या पुराणों से जो भी मिला है वो हमने सीखा है लेकिन वक़्त ज़रूरत के हिसाब से जब उसे मंच पर प्रस्तुत करने की बात आती है तो हमें अगर उसमे कुछ परिवर्तन करने पड़ते हैं तो इसमें बुराई क्या है परिवर्तन इस लिहाज से की मूल कथानक, कथ्य में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है, बल्कि ये सुविधा इसलिए ली गयी है की इस बात को गंभीरता के साथ थोड़ी सहजता से मंच पर उतारा जा सके | अब हबीब तनवीर को आगरा बाज़ार नाटक कहने के लिए बहुत से सहारों कीज़रूरत पड़ी इसका अर्थ ये बिलकुल नहीं था की वो कहीं से नज़ीर के कथ्य को तोड़ मरोड़ देंगे लेकिन बात आम जनता तक कैसे पहुँचाई जाये सवाल ये है |

तो ये जो कल्चर है इसे हम उर्दू में तहज़ीब और तमद्दुन कहते हैं लेकिन कुछ लब्ज़ ऐसे हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता | इसके अन्दर बहुत से संस्कार भी शामिल हैं |

चाहे आप कितने ही सृजनात्मक क्यों न हों, लेकिन एक अनपढ़ आदमी अपनी कला के साथ जब भी आएगा वो कुछ नया ही लेकर आएगा | बेशक तालीम एक अच्छी सोच देती है एक वैज्ञानिक दृष्टि देती है लेकिन तालीम आप को कल्पना तो नहीं देती न |

हबीब तनवीर का अपने कलाकारों के साथ पेश आने का तरीका बिलकुल देसी रहा उन्होंने शुरुवाती दिनों में बेशक विदेश से सीखा हुआ ज्ञान थोपने की कोशिश की लेकिन वो नाकाम रहे | अंतत उन्होंने अपने कलाकारों को उसी रूप में स्वीकार किया जिसस्वरुप में वे थे |

हबीब के शुरूआती दिनों का रंगमंच

रंगमंच की शुरुआत एक तरह से रायपुर से हो चुकी थी उसके बाद हबीब तनवीर ने बम्बई इप्टा के साथ काम करना शुरू किया और लगातार नुक्कड़ नाटक, मंचों और साहित्यिक सेमिनारों के ज़रिये रंगमंच के लिए काम कर रहे थे उन दिनों बम्बई में तमाम बड़े लेखक कलाकार काम कर रहे थे जो बाद में फिल्म की दुनिया में बहुत मशहूर हुए | लेकिन एक वक़्त के बाद इप्टा बिखर गया और हबीब तनवीर का फिल्मों में काम करने का सपना अधूरा रह गया और फिर वो दिल्ली आ गए |

दिल्ली आके हबीब साहब ने एक स्कूल में पढ़ाने का काम शुरू किया वहां उनकी मुलाक़ात बेगम कुदेसिया जैदी से मुलाक़ात हुयी रंगमंच का सफ़र आगे बढ़ा | इसी बीच जामिया के कुछ दोस्तों के अनुरोध पर उन्होंने नज़ीर की नज्मों के ऊपर एक नाटक लिखा 'आगरा बाज़ार इस नाटक में खूब प्रयोग किये और नज़ीर की नज़्मों को अच्छी धुनों में पिरोकर पेश किया | ये अनूठा प्रयोग दिल्ली के दर्शकों के लिए बहुत ही रोचक साबित हुआ और दर्शकों ने इसे खूब सराहा | यह नाटक उन्होंने ग्रामीण कलाकारों और शहरी अभिनेताओं के साथ खेला जो उन दिनों दिल्ली में बहुत चर्चित था | इस नाटक से हबीब की बड़ी पहचान बन गयी दिल्ली में, वो बड़े लेखक निर्देशक के तौर पर जाने गए | उसके बाद प्रेमचंद की कहानी को आधार बनाकर उन्होंने 'शतरंज के मोहरे' नाटक तैयार किया | सैथ्यु ने इन नाटकों का सेट डिजाईन किया और उनकी लाइटिंग की थी |

ब्रेख्त के असर का प्रयोग

हबीब तनवीर ने ब्रेख्त के सूत्र को दिल में बसा लिया था की नाटक में मज़ा आना चाहिए जैसे म्यूजिक हॉल में आता है या फुटबॉल के मैदान में | ब्रेख्त की अवधारणों को तो वो पहले ही 'आगरा बाज़ार' और 'शतरंज के मोहरे' में प्रयोग कर चुके थे | बर्लिन अस्सेम्बली के उदाहरण ने उन्हें इसके लिए उत्प्रेरित किया की गीत तथा नृत्य का उपयोग नाट्य शैली के ही हिस्से के तौर पर किया जाए | उस समय तक इप्टा के मराठी तथा गुजराती नाटकों में लोक शैली का उपयोग चलन में भी आ चुका था लेकिन हबीब से पहले ऐसा प्रयोग हिंदी उर्दू थिएटर में कभी किसी ने नहीं किया था इस स्तर पर |

अब हबीब तनवीर ने 'मिटटी की गाडी' के नाम से शूद्रक के नाटक 'मृच्छकटिकम' की संगीत मय प्रस्तुति करने का फैसला किया | इसी बीच हबीब तनवीर रायपुर गए हुए थे वहां वो छत्तीसगढ़ के कलाकारों से मिल लिए उनका नाचा देखा और उन लोक कलाकारों से इस क़दर प्रभावित हुए की उन्हें नाटक 'मिट्टी की गाड़ी' करने के लिए दिल्ली लेके आ गए | इसी तरह उन्होंने मुद्रा राक्षस नाटक में भी संगीत का प्रयोग किया |

नाटक 'चरनदास चोर' के बाद हबीब तनवीर का देश भर में बहुत नाम हो गया |इसी के साथ साथ 'पोंगा पंडित' नाम के एक और नाटक से हबीब तनवीर को खूब ख्याति मिली सबको लगता था की ये नाटक हबीब तनवीर का लिखा है जबकि ये नाटक छत्तीसगढ़ में दशकों से लोक कलाकारों द्वारा खेला जा रहा था

हबीब तनवीर ने भले ही पारंपरिक और लोक कलाकारों के साथ काम किया हो, लेकिन संस्कार और दृष्टी से वे हमेशा आधुनिक बने रहे | इसमें शक नहीं की उन्होंने दुनिया भर में भारतीय रंगमंच की प्रतिष्ठा दिलवाई साथ ही भारतीय रंगमंच के जनसंस्कृति मॉडल का वैकल्पिक ढांचा भी तैयार किया |

गोर्की कहते हैं की

"यह दुनिया और उसमे जीवन की अनंत रूपात्मकता ही सब से बड़ा विश्वविध्यालय है/ जिसने इसमें दाखिला लिया वो सही मायनों में ज्ञानी हो जायेगा/ इस विश्वविध्यालय से लगाव हो तो आदमी ज्ञानी और कलाकार क्या नहीं हो सकता "/

भरतमुनि

ने नाट्यशास्त्र में लोकधर्म का व्याकरण पेश कर उसे पांचवा वेद बना दिया |

<u>भारतेंदु के सच्चे उत्तराधिकारी हैं हबीब तनवीर</u>

लेखक आलोचक रंगमंच के जानकार कमला प्रसाद जी भारतेंदु के सच्चे उत्तराधिकारी मानते हैं हबीब तनवीर को |

कमला प्रसाद जी कहते हैं की लोक जीवन की अनुकृति में अंधेर नगरी जैसा नाटक लिखा भारतेंदु ने, और आजाद भारत में हबीब तनवीर ने लिखा नाटक आगरा बाज़ार दोनों को पढ़ के देखिये फिर समझिये क्या खूबी है दोनों में एक साथ | भारतेंदु की आत्मा विकास क्रम में हबीब की चेतना उतरी है | देशकाल कारंग और अंदाज़ अलग अलग पर दोनों में लोक का अलंकृत स्वाभाव | भारतीयता इससे बाहर कहाँ होगी ?

हबीब तनवीर के लिखे नाटकों में देशप्रेम का मर्म है, आगरा बाज़ार, चरणदास चोर, मिटटी की गाड़ी, बहादुर कलारिन, लाहौर जैसे नाटकों को देख कर प्रतीत होता है की ऐसा स्वाभिमान का वर्चस्व भाव लोक स्वाभाव के अनुरूप नहीं होता |

हबीब साहब के काम को देखने के लिए उनकी कार्यशालाओं को ध्यान से समझना ज़रूरी है |

कमला प्रसाद जी अपना एक अनुभव शेयर करते हुए कहते हैं की मध्यप्रदेश के रीवा में अपने कलाकारों के साथ कार्यशाला करते हुए मैंने हबीब तनवीर को देखा जिसमे वे 'देख रहे हैं नैन' नाटक का अभ्यास कर रहे थे जिसमे की 30 से 40 कलाकार चयनित हुए थे हबीब साहब सभी को लेके अभिनय, नाट्य संगीत, और रंगमंच की अन्य समस्याओं के बारे में जानते हुए अभ्यास कर रहे थे |

हबीब साहब ने सभी कलाकारों को अपने साथ लिया और आस पास के गॉव के खूब चक्कर काटे ताकि लोक को इकट्ठा किया जा सके | अंचल में बसने वाली पेशेवर जातियों की लोक कथाओं, लोक गीतों के बारे में जाना और आवश्कतानुसार संग्रह किया | इसी क्रम में बसदेवा जाति के गीतों में उन्हें कुछ विलक्षण प्रतिभाएं दिखी | कार्यशाला में वो जो नाटक तैयार कर रहे थे, उसमे स्थानीय लोक तत्वों का समावेश किया | अभ्यास करते करते नाट्य संगीत और उसकी धुनें निर्मित की | इस तरह जो नाट्य प्रस्तुति हुयी, उसे दर्शकों ने अपने आस पास की संस्कृति के रचनात्मक रूपांतरण की तरह देखा |

<u>कथानक में लोक है और मंच पर अभिनय</u>

लोक के अभिनय में कौशल का वैसे तो दिखना संभव नहीं होता | यहाँ ये भ्रम नहीं होना चाहिए की निर्देशक और नाट्य लेखक हबीब साहब की भूमिका का कोई पक्ष नहीं है | यह प्रश्न खूब होता है, पूरी ताकत के साथ होता है | उनके सभी नाटकों में राजनीती है, राजनीती का पक्ष है | वर्ग दृष्टि है | शोषित पीड़ित जनता का पक्ष है| धर्म निरपेक्ष चरित्र है | शोषकों पर हमला है, उन पर मजाक है व्यंग है| अपने समूचे निहितार्थ में हबीब साहब के नाटक राजनैतिक मंच का निर्माण करते हैं | कार्यशाला के दौरान राजनीति रसायन की पहचान करना कठिन नही होता | यह प्रक्रिया पात्रों,परिस्थितियों के अपने स्वाभाव के अनुरूप उभरती चलती है |

लेनिन ने कहा था की'*आदमी अपने ज्ञान और अपनी योग्यता से बहुत ऊपर उठता है'बड़ा काम है ये/ इससे भी बड़ा काम है हजारों को एक हाथ ऊपर उठाना/*

<u>हबीब साहब ने लोक को ऊपर उठाया</u>

हबीब साहब ने लोक को ऊपर उठाया | छत्तीसगढ़ के निरक्षर कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाई | लोक और लोक के कलाकारों की प्रगति का निहितार्थ उन्हें नए ज़माने में ढालना रहा है | रंगमंच में घुस गयी आज की आधुनिकता आज के लोक से दूर होकर पश्चिमी नक़ल बन गयी है | उसमे आधुनिकता या उत्तर आधुनिकता की कलमें लगी हैं | लोक भाषा और मानक भाषाओं के बीच आवाजाही के रिश्ते से बनी हबीब तनवीर की रंगभाषा नए सौन्दर्य शास्त्र का आधार बनी है | नाट्य शास्त्र की जिस लोक धर्मी रंग धरा की मांग भरत ने की थी, हमारे समय में हबीब तनवीर ने उसे रचा है |

हबीब के अनेक पड़ाव रहे हैं मंच से उन्होंने शायरी सुनाई, फिल्म की दुनिया में अपनी क्षमता को परखा है, राजनितिक दृष्टि से रंगमंच की व्यवस्थित यात्रा शुरू की और नया थिएटर उनकी सर्वांग रचना है | नया थिएटर और हबीब साहब पर्याय रहे हैं |

'मिटटी की गाड़ी' से हबीब तनवीर को विश्वास हो गया की लोक नाटक की शैली व तकनीकें, संस्कृत नाट्य लेखकों की कृतियों की नाट्य कला में अंतर्निहित शैली व् तकनीकी से मेल खाती हैं

हबीब तनवीर का मानना था की संस्कृत नाटकों की नाट्य शैली तक लोक परम्पराओं से होकर पहुंचा जा सकता है | तनवीर का कहना है की क्लासिक नाट्य लेखक जैसे कल्पनाशील लचीलेपन व् सरलता से अपने नाटकों में एक्शन का देश व् काल स्थापित करते हैं बदलते हैं, वह हमारी लोक प्रस्तुतियों में बहुतायत में पाया जाता है | 'मिटटी की गाड़ी' और विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' की उनकी प्रस्तुति इसे व्यवहार में प्रमाणित करते हैं | मिसाल के तौर पर इन दोनों ही प्रस्तुतियों में नाटक को बाकायदा रोके बिना ही संवादों तथा मूवमेंट के ज़रिये देश व् काल के बदलाव को सूचित कर दिया जाता है| मिटटी की गाड़ी से एक मिसाल देना चाहता हूँ की नाटक में एक पात्र अपने मातहत आदेश देता है की बगीचे में जाएँ और देखकर आये कि 'क्या वहां किसी औरत की लाश है' ? | मातहत बस एक बार मंच के गिर्द चक्कर लगाता है और लौटकर जवाब दे देता है,

" मैं बागीचे गया और मैंने देखा की वहां एक औरत की लाश है"

हबीब तनवीर ने बड़े सघन तरीके से ग्रामीण कलाकारों के साथ उनकी बोली में तथा नाट्य प्रदर्शन की उनकी अपनी शैली में काम किया है | वह अपने ही परम्परागत टुकड़े, ज़्यादातर अपने ही तरीके से करने देते थे उन्हें मंच प्रस्तुति के लायक बनाने के लिए उनका संपादन करने तथा यहाँ वहां उन्हें निखारने भर का ही काम करते थे | इस दौर में उन्होंने मंदिर के कर्मकांड से लेकर जाने पहचाने लघु नाटकों तथा पंडवानी तक बहुत कुछ अजमा कर देखा था |

परम्परागत रूपों की ओर उनके झुकाव और उनके वामपंथी झुकाव के बीच एक घनिष्ठ सम्बन्ध था | वामपंथी सांस्कृतिक आन्दोलन के साथ उनका जुडाव जो कितने ही ढीले ढाले तरीके से क्यों न रहा हो वह आखिरी समय तक बना रहा | वे आम आदमी तथा उसके हितों के लिए एक प्रतिबद्धता तो पहले ही निश्चित कर चुके थे | नाटक में उनका काम, अपनी शैली तथा अपनी अंतरवस्तु दोनों में ही वृहत्तर परियोजना के हिस्से के तौर पर देखा जा सकता है |

लोक के प्रति तनवीर का लगाव किसी पुनरुत्थानवादी या प्राचीनतावादी आवेग से संचालित नही है | इसके बजाय यह इसकी जागरूकता पर आधारित है की इन परम्पराओं में ज़बरदस्त सृज्नात्मक संभावनाएं और कलात्मक उर्जाये छुपी हुयी हैं | इसमें शक नहीं की उनके नाटकों की शैलियां परम्परागत नाचा की पृष्ठभूमि से जुडी रही हैं | एक बात तो यही है की जहाँ नाचा में वास्तविक अभिनेताओं की संख्या दो या तीन होती है वहीँ बाकि सब ज़रूरत पढने पर गायक नर्तक का जिम्मा खुद ही सब संभाल लेते हैं |

हबीब तनवीर की शहरी आधुनिक चेतना और लोक रूपों व् शैलियों की इस संबद्ध अंतर्क्रिया की शायद सबसे अच्छी अभिव्यक्ति उनके नाटकों के गीतों में होती है |

उनके काम में सामान्यत ये दोनों तत्व एक सामूहिक सहयोगी उद्धम में बराबरी की हिस्स्दारों के तौर पर मिलते हैं तथा परस्पर एक दुसरे में प्रवेश करते हैं |

इस क्रम में दोनों ही एकदूसरे से लेते देते हैं इस शोषण मुक्त रुख की बेहतरीन मिसाल है हबीब तनवीर का अपनी कविता को परम्परागत लोक व् आदिवासी संगीत में ढालना तथा उसके हिसाब से चलाना | इस प्रकिया में कविता अपनी कल्पना शीलता की व भाषाई शक्ति को तथा सामाजिक राजनैतिक अर्थ को भी बनाये रखती है और दूसरी ओर किसी भी तरह से आदिवासी संगीत का अमुल्यन या विनाश नहीं करती है |

<u>ब्रेख्त और हबीब तनवीर</u>

बीसवी सदी के सबसे महतवपूर्ण नाटककारों निर्देशकों और रंग चिंतको में बर्तोल्त ब्रेख्त संभवत सबसे अधिक चर्चित और प्रशंसित रहे हैं | खास तौर से इसलिए की पाश्चात्य रंगमंच की बुनियाद समझे जाने वाले अरस्तु के नाट्य सिद्धांत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इतना बड़ा झटका पहले कभी नहीं लगा |

विश्व के अनेक रंग समीक्षकों ने हबीब तनवीर के रंगकर्म को ब्रेख्त के घराने का ही प्रतिपादित किया है |

कुछ रंग समीक्षक उन्हें भारतीय पारंपरिक और ब्रेख्त के बीच की कड़ी के रूप में देखते हैं |

एडिनबरा फेस्टिवल में चरणदास चोर की प्रस्तुति के बारे में एक समीक्षक ने ये भी कहा की " लोक नृत्य और गीतों से सजे इस नाटक में संस्कृत और ब्रेख्त का अद्भुत समन्वय है | स्वयं हबीब ने कभी इस बात का खंडन नहीं किया | बल्कि उन्होंने अपने अनेक लेखों भेट वार्ताओं और में ब्रेख्त के रंगकर्म की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उसे गुरुतुल्य मान्यता दी है |

कहीं ऐसा तो नहीं की अपनी राह के अन्वेषण के दौरान हबीब तनवीर को ब्रेख्त के सिधांतों और मान्यतों में ऐसा बहुत कुछ नज़र आया हो, जो उनके विचारों के समान्तर रहा हो, हबीब तनवीर का बहुत सा काम ऐसा है जो ब्रेख्त के काम के जैसा है और कुछ विषयों पर हबीब को अलग भी करता है | सच तो ये है की ब्रेख्त और तनवीर दोनों में समानताएं हैं तबियत से दोनों शायर कवि और कट्टर मानवतावादी है|

दोनों ही मानव के हितों वाले समाज की प्रशंसा करते हैं | दोनों के ही काम में आम आदमी हीरो हैं जो आपनी व्यथा के ज़रिये पूरे सिस्टम को सामने रखता है | दोनों ने ही अपने अपने तरीके से तत्कालीन समाज में हो रही बुराइयों को जनता के सामने रखा, सिस्टम के सामने रखा और समाधान भी दिया |

हाँ ये कहना यहाँ बुरा नहीं होगा की जब हबीब तनवीर का काम शुरू हुआ तब तक तो ब्रेख्त स्थापित हो चुके थे, बल्कि उनका देहांत भी हो गया था लकिन जब से हबीब ने उन्हें जानना समझना शुरू किया तब से ब्रेख्त की झलक हबीब तनवीर के काम में नज़र आने लगी | ब्रेख्त खुद भी कमुनिस्ट पार्टी के समर्थक थे हबीब भी वैसे ही रहे, शोषण के खिलाफ आवाज़ बुलंद करते रहे | ब्रेख्त ने भी ज़्यादातर खुद के लिखे हुए नाटक खेले, विषय ज़रूर सामाजिक थे या किसी घटना से प्रेरित थे ये सब हुआ लेकिन ज़्यादातर के विषय वे थे जो हबीब की पसंद थे |

नाटक और रंगमंच का आधुनिक इतिहास नए नए प्रयोगों का इतिहास है

यह तो नहीं कहा जा सकता की हबीब तनवीर ही अकेले ऐसे कलाकार थे जिन्होंने नए प्रयोग किये थे लेकिन यह सही है की आधुनिक पश्चिमी शैली के नाटकों को लोक नाटकों से जोड़कर नए तरह के नाटक करने का काम निश्चित तौर पर हबीब तनवीर ने सबसे पहले किया | ऐसा करके लोक नाटकों की हजारों साल की परंपरा को हबीब ने आधुनिक पहचान दी और निरंतर इसे जारी रखने के लिए प्रयत्नशील भी रहे | ऐसा करते हुए नाटकों की विषयवस्तु के साथ कोई समझौता नहीं किया | भारतीय नाट्य परंपरा में नाच गाने के अनिवार्य तत्व मौजूद रहे हैं खासतौर पर लोकनाट्य परंपरा में | पारसी थिएटर के नाटकों में नाच गानों की परंपरा लोकनाट्य परंपरा से ही आई |

संस्कृत के नाटक भारतीय इतिहास के मध्य युग में लुप्त प्राय हो गए थे| हिंदी साहित्य के लगभग एक हज़ार साल के इतिहास में नाटकों का लेखन सिर्फ 19वी शताब्दी के उतरार्ध में मिलता है | एक दो नाटक अपवाद रूप से रीतिकाल में लिखे गए थे लेकिन ये कोई महत्त्व नहीं रखते हैं | लेकिन इसी एक साल में लिखे गए नाटकों से भी मनोरंजन बना रहा जो रंगमंच अभिजात्य वर्ग का हिस्सा था वो धीरे धीरे आम जनता के बीच आया | 1853 में आगा हश्र कश्मीरी ने 'इन्दरसभा' नाटक लिखा लेकिन इस नाटक में साफ़ तौर पर अंग्रेजी रंगमंच की झलक दिखती है, हालाकिं ये नाटक पारसी रंगमंच के फॉर्म में लिखा गया | इस पारसी थिएटर में जो मेलोड्रामाई झलक नज़र आती है उसकी जड़ लोक कला में मौजूद है |

संस्कृति का धर्म से गहरा ताल्लुक है

संस्कृति का धर्म से बहुत गहरा ताल्लुक है हमारा कोई भी संस्कार ऐसा नहीं है जिसमे धर्म का ताल्लुक न हो | जितनी रवायतें हैं जितनी परंपरा है वो सब इस से जुडी हैं | मुहर्रम ईद बकरीद होली दिवाली दशहरा सभी त्यौहार धर्म से ही शुरू होते हैं और इसे से हमारी संस्कृति जुडी हुयी है इसी से संस्कार जुड़े हैं | हर साल में इतने त्यौहार आते हैं की वो हमें लगातार संस्कारों से जोड़े रहते हैं यही वजह है की जब जब संस्कार पतन की ओर जा रहे होते हैं जब भी हमारे कार्य व्यव्हार में संस्कारों की कमी झलकने लगती है तब तब कोई न कोई त्यौहार आता है जो हमें एक साथ जोड़ देता है | अब देखिये ईद में बनने वाली सिवाई या मिठाई हिन्दुओं तक भी आती हैं | रामलीला में बनने वाले कपडें मुसलमानों द्वरा सिये जाते हैं | रामलीला में प्रयोग होने वाले मुखौटे मुसलमान कलाकारों द्वारा बनाये जाते हैं ऐसा लखनऊ में खूब देखने को मिलता है, रामलीला में मिलने वाला फण्ड बहुत से मुसलमानों द्वारा दिया जाता है | रामलीला में काम करने वाले बहुत से एक्टर मुसलमान है | इसी प्रकार मुसलमानों के त्योहारों में भी होता है मुहर्रम में बनने वाले ताजिये बहुत से हिन्दुओं द्वारा बनाये जाते हैं गाड़ियों रोड की सजावट आदि का बहुत सा कम हिन्दुओं द्वारा किया जाता है यही वजह है धर्म सबको साथ जोड़ के भी रखता है, यही से संस्कृति निकलती है यही से संस्कार जन्म लेते हैं| मर्सिया पढने सुनने के बाद क्या हिन्दू क्या मुसलमान सब रोते हैं क्यों की वो जो घटना है जो एक हादसा है जिसमे इंसानियत संघर्ष करती दिखती है वो मानवता वादी तत्व लिए है, जहाँ किसी भी इंसान की आँखों में आंसू आना स्वाभाविक है |

हमेशा से यही होता है संघर्ष इंसानियत करती है और हमारी भावनाएं इंसानों के साथ जुडती चली जाती हैं इसलिए हम भावुक कहलाते हैं | यही से संस्कारों का जन्म होता है हमारे अन्दर मानवता जनम लेती है और इंसानी तौर पर लोगों से जुड़नाशुरू कर देते हैं | धर्म कोई भी लो लेकिन उसके आधार स्तम्भ जिस पर वो धर्म स्थापित हुआ है उसके आधार ने इंसानियत की रक्षा के लिए ही काम किया उसके लिए संघर्ष किया है |

नया थिएटर के नाटकों का बैक स्टेज

हबीब तनवीर साहब की नाटक मंडली नया थिएटर में मैं पहली बार वर्ष 2006 में आया था | उन दिनों हबीब साहब रविन्द्र नाथ टैगोर लिखित नाटक 'विसर्जन' और नॉवेल 'राजर्षि पर आधारित एक नाटक की तैयारी कर रहे थे | उन दिनों हबीब साहब के घर पर ही रीडिंग हुआ करती थी | सभी कलाकार नाटक और नावेल पढ़ रहे थे | इसी बीच मैं भी वहां जाने लगा था, मुझे भी मौका मिल जाता था वह जाने का मैं भी रीडिंग

करने लगा था | धीरे धीरे हबीब तनवीर साहब ने मुझसे कहा की तुम अच्छा पढ़ते हो अब तुम दिन में सभी कलाकारों को एक साथ इस नाटक और नॉवेल के बारे में पढाओ जिससे की इन्हें कहानी अच्छे से समझ में आ जाये | मुझे और क्या चाहिये था मुझे तो जैसे बहुत बड़ा काम मिल गया हो, मैंने हबीब साहब को उस शाम शुक्रिया कहा और चला गया अगले दिन सुबह मैं नया थिएटर के कलाकारों के निवास स्थान पर पंहुचा,दिए गए वक़्त के हिसाब से सभी लोग तैयार थे मुझ नाटक पढना था और सबको सुनना था मेरे सुनाने में सभी को बहुत मज़ा आया, कहानी समझ आई शाम को ये खबर हबीब साहब तक गयी की संदीप ने अच्छे से पढ़ा हबीब साहब मुझे नोटिस करने लगे की मेरा ध्यान अब स्क्रिप्ट कहानी पर लग गया है शाम को जब मैं रिहर्सल में आया तो हबीब साहब ने मेरी तारीफ की और कहा की पता चला की आप ने अच्छा पढ़ा | मैं चुप रहा, मेरी इच्छा इस नाटक में एक भूमिका निभाने की थी तो मैं उसके लिए प्रयत्नशील था ये खबर भी हबीब साहब को मालूम थी इसी लिए उन्होंने सबसे पहले मुझे स्क्रिप्ट के स्तर से जोड़ने का काम शुरू किया था|

मेरे साथ अन्य कलाकार भी आये थे वो मेरी ही हम उम्र थे लेकिन उनके दिमाग में ये क्लियर नहीं था की वो क्या करना चाहते हैं जब की मेरे दिमाग में शुरू से ही क्लियर था, लिहाज़ा हबीब साहब ने सबसे पहले मुझे ही काम पे लगाया | रीडिंग और रिहर्सल के दौरान नया थिएटर के सभी कलाकरों से मेरी अच्छी जमने लगी |

धीरे धीरे सब मुझे पसंद करने लगे मेरी मेहनत और मेरा व्यवहार देख कर चूँकि मेरा इरादा बिलकुल निश्चित था की मुझे इन कलाकारों के साथ ज्यादा से ज्यादा वक़्त बिताना है कारण साफ़ था की मैंने नया थिएटर के बारे में सुना था की सभी कलाकार कमाल के परफोरमर हैं | और मुझे अभिनय के विविध पहलुओं के बारे में जानना था और मैं वही जानने की कोशिश में लगा रहता था | अंततः एक दिन क्या हुआ की हबीब साहब ने मुझसे कहा की तुम मुझे इस नाटक में असिस्ट करोगे | हबीब साहब के मुंह से खुद ऐसे शब्द सुनकर मैं तो ख़ुशी के मारे फुला नहीं समां रहा था | मैंने तुरंत हबीब तनवीर साहब के पैर छुए और उनसे वादा किया की मैं बहुत मेहनत करूँगा| अगले दिन से मैं और मुस्तैदी के साथ अपने काम में लग गया | हबीब साहब बहुत ही बारीकी से मुझ पर नज़र रखे हुए थे | रिहर्सल शुरू हो चुकी थी अब रिहर्सल के साथ साथ ये भी प्लान बनने लगा की बैक स्टेज के काम कैसे शुरू किये जाएँ ? और इन्ही कलाकारों में से किस विभाग की कौन कौन ज़िम्मेदारी लेगा ?

सबसे पहले घरेलू चीजों से ही काम चलाया जाता है नाटक में

नया थिएटर में नाटक की रिहर्सल में सबसे पहले उन सबसे छोटी चीजों से ही काम चलाया जाता है जो घर में उपलब्ध हैं, जैसे की छोटी छोटी प्रॉपर्टी |

अब एक दिन रिहर्सल में क्या हुआ की हम सभी लोग बैठे थे इसी बीच चाय की तलब मची और एक सीनियर कलाकार उदय राम जी किचन में चले गए सबके लिए चाय बनाने वो चाय बनाने में व्यस्त थे तभी उनका सीन आ गया | अब वो किचन से निकले तो उनके हाथ में भगोना पकड़ने वाला एक होल्डर था वो लेके ही वो सीन में घुस गए और उसी होल्डर को तलवार की तरह इस्तेमाल कर डाला | किसी भी कलाकार को कुछ भी असहज नहीं लगा | सबने बेहद सामान्य तरह से इसे एडजस्ट किया | किसी को भी कुछ अलग नहीं लगा | इसी प्रकार ये कई बार हुआ की जो गमछे ये लोग गले में डाल के घूमते हैं उसी गमछे को कई अलग अलग तरीके से प्रयोग में ले आते थे रेहेर्सल के दौरान | धीरे धीरे फिर नाटक के हिसाब से चीज़े प्रॉपर आनी शुरू हुयी थी | उससे पहले रीडिंग के दौरान मामूली से चीजों को हैण्ड प्रॉप्स बना कर ये लोग इस्तेमाल कर लेते हैं एक फील देने के लिए वो भी बहुत ही सहजता के साथ, बिना कोई बाधा उत्पन्न किये हुए ये इन कलाकारों का बहुत बड़ा हुनर है |

हबीब तनवीर के नाटकों में सबसे पहले आता है हैण्ड प्रॉप्स

हबीब तनवीर के नाटकों में सबसे पहले हैण्ड प्रॉप्स का इस्तेमाल किया जाता है| रीडिंग और रिहर्सल शुरू होने के कुछ ही दिनों बाद सबसे पहले बैक स्टेज का जो हिस्सा जुड़ता है हबीब तनवीर के नाटकों में वो है 'प्रॉपर्टी' | सबसे पहले कलाकार को हैण्ड प्रॉप्स दिये जाते हैं फिर शुरू होती है रिहर्सल कारण ये है की हैण्ड प्रॉप्स के आ जाने से सबसे पहले तो एक्टर्स अपने शरीर के स्तर पर ये सुनिश्चित कर लेता है की उसे कैसे किस सीन में क्या प्रयोग करना है |

मंच पर सबसे ज्यादा कठिन होता है हाथों का प्रयोग

हबीब साहब हमेशा कहते थे की एक्टर्स के लिए सबसे मुश्किल काम होता है मंच पर हाथों का प्रयोग , एक्टर्स

अभिनय के दौरान ऐसा क्या करें की हाथों का सही प्रयोग हो सके क्यों की अगर सही प्रयोग न मिल सके तो हाथ फिर यहाँ वहां बेवजह प्रयोग होते हैं जैसे की अमूमन हाथ बाँध के खड़े हो जाते हैं एक्टर्स,हाथ पीछे कर लेते हैं एक्टर्स, या हाथ बंध के कमर के ऊपर रख लेते हैं जो की प्रयोग के द्रष्टिकोण से बहुत ही बेकार लगते हैं | इसी से बचने के लिए हबीब साहब जल्दी से जल्दी एक्टर्स को उनके हाथों में प्रॉपर्टी दे दिया करते थे जिस से प्रॉप्स से होने वाले क्रिया कलाप सुनिश्चित हो जाएँ | इस से हबीब साहब को लगता था की ये एक्टर क्या क्या करने वाला है शो में | धीरे से फिर कॉस्टयूम को इंट्रोड्यूस किया जाता है | अब चरित्र में एक्टर को घुसने में मदद होती है |हबीब तनवीर हंमेशा से एक्टर को बहुत मदद करते थे चरित्र को समझने में क्यों की खुद भी एक्टर थे उन्हें पता था की कैसे कैसे क्या तकलीफ से गुजरना पड़ता है एक्टर को, जब वो करैक्टर को कंसीव कर रहा होता है |

<u>हबीब तनवीर साहब के नाटकों में कॉस्टयूम, सेट लाइट, मेकअप</u>

हबीब तनवीर अपने नाटकों में वेशभूषा भी जल्दी ही इंट्रोड्यूस कर देते थे कारण ये था की बहुत से शहरी एक्टर्स भी अब नाटकों में काम करने लगे थे तो उनके लिए भी सुविधा हो जाती थी क्यों की ज़्यादातर उनके नाटकों में वेशभूषा या तो बहुत ही प्राचीनकाल पौराणिक वाली होती थी या फिर गॉव की पृष्ठभूमि लिए हुए होती थी इसके ज़रूरी था की वेशभूषा की सही से रिहर्सल हो जाये जिससे की कलाकरों को कोई दिक्कत न हो, वरना फिर शो के बीच में लगता है की कॉस्टयूम नहीं संभल रहा है इसलिए रिहर्सल के बीच में ही कई बार कॉस्टयूम का भी रिहर्सल कर लिया जाता था जिससे की एक्टर्स सुविधाजनक महसूस करें और उनकी नाप जोख का भी अनदाज़ा रहे क्यों की होता ये था जो एक्टर्स मंच पर काम कर रहे होते है उन्हें में से कुछ एक्टर्स को ही कॉस्टयूम सँभालने व देखरेख की ज़िम्मेदारी भी दी जाती है |

इसलिए रिहर्सल के बाद जिसमे कॉस्टयूम का ट्रायल हो जाता था उसी रिहर्सल में सभी कलाकारों को मिल जुलकर सबकी कॉस्टयूम संभालनी होती है रखनी होती है | कॉस्टयूम की ज़िम्मेदारी सँभालने का काम वरिष्ठ कलाकार उदय राम जी को मुख्य रूप से सौपा जाता था, अब उदय राम जी नया थिएटर छोड़ के अपने गॉव चले गये बुड्ढे हो गए हैं लेकिन उन दिनों उदय राम जी को सबकी कॉस्टयूम याद भी रहती थी की किसको कब क्या देना है कहाँ कहाँ पहनना है वर्तमान में अब ये ज़िम्मेदारी अमर सिंह निभाते हैं |

वैसे हबीब तनवीर के सभी नाटकों की बात करें तो उनके नाटकों में अभिनय पक्ष इतना मजबूत होता था की बैक स्टेज की चीजों पर ध्यान ही नहीं जाता था और जो कमी रह जाती थी या यूँ कहें की बाकी नाटक या कला को पूर्ण करने के लिए संगीत पक्ष बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण हुआ करता था लेकिन फिर भी हबीब साहब अपने सभी नाटकों में बहुत अच्छे से सभी पक्षों का बहुत ध्यान देते थे | इस उम्र तक आने के बावजूद भी उनकी नज़र हर एक पक्ष पर रहा करती थी खुद सभी चीजों की जांच करते थे की सब कुछ ठीक है की नहीं या फिर बैक स्टेज की ज़िम्मेदारी जिन भी कलाकारों को सौपीं जाती थी वो खुद ही हबीब साहब को सब चीज़े दिखाते थे फाइनली सब कुछ ओके करवाने के

लिए |

<u>नाटक राजरक्त का बैक स्टेज</u>

नाटक राज रक्त वो पहला नाटक है जिसमें मैंने काम किया था नया थिएटर में आने के बाद ये बात सन 2006 की है, मैं पहली बार भोपाल आया था | राज रक्त की तैयारी के समय मैं शुरू से ही जुड़ गया था जैसा की मैंने पहले ही कहा की मुझे जो जिम्मेदारी नया थिएटर में सौंपी गयी वो तो मैं निभा ही रहा था साथ ही साथ मुझे ये भी सीखना था की बैक स्टेज में भी मैं कैसे शामिल हो जाऊं जिससे की अधिक से अधिक सीखने को मिले हालाकिं हबीब साहब ने मुझे जो ज़िम्मेदारी दी थी वो थी स्क्रिप्ट से सम्बन्धित,रिहर्सल करवाने से सम्बंधित तो पहले ही उसमे इतनी व्यस्ततता हो जाया करती थी की बाकी कामों के लिए समय ही नहीं था लेकिन फिर धीरे धीरे वक़्त निकालना शुरू किया, यधपि हबीब साहब ने एक बार कहा भी था की कुछ काम तो दूसरों को भी करने दो की सब खुद ही कर लोगो |

मैंने कहा सर समय मिल जाया करता है इसलिये सोचा की इनकी मदद कर दिया करूँ इस बहाने कुछ सीख भी लूँगा | हबीब साहब नेइजाज़त दे दी थी|

अब मैं बताता हूँ की इस नाटक में कैसे बैक स्टेज काम की शुरुवात हुयी | सबसे पहले हम लोग सिर्फ नाटक की रीडिंग करते थे ज़मीं में बैठ के फिर धीरे धीरे संवाद याद होने लगे और रीहर्सल बैठ के ही शुरू हुई संवाद के स्तर पर फिर हमने उसमे कुछ इम्प्रोवाईजेशन शुरू किये तब तक भी बात ठीक थी अब शुरू हुआ था एंट्री एग्जिट का काम | इसकी रीडिंग हबीब तनवीर साहब के घर पर ही शुरू हुयी थी हबीब साहब कुर्सी पर बैठे रहते थे और कलाकार अपने अपने हिसाब से अभिनय कर रहे थे | जब नाटक तैयार किया जा रहा था तो हम लोगों ने नाटक राजरक्त और नावेल राजर्षि दोनों ही पढ़े थे | दोनों को मिलाकर नाटक राजरक्त तैयार हुआ था | अब कहानी को अच्छे से कहने के लिए शुरू के एक सीन में सूत्रधार की भूमिका जोड़ी गयी और संवाद लिखे गए | अब जब नाटक की रिहर्सल शुरू हुयी थी तो शुरू शुरू में मैंने ही सूत्रधार की भूमिका निभाई और मैंने सीधे मंच पर आकर मैंने बोलना शुरू किया|बाद के सीन में अन्य कलाकारों ने अपने सीन में एंट्री शुरू की | बिना हबीब साहब से पूछे ही सबने एंट्री की, अपने संवाद बोलने शुरू किये | शुरू में तो सबके हाथ में स्क्रिप्ट थी लेकिन धीरे धीरे संवाद याद होने शुरू हुए जब जब कोई भूलता था तो मैं उन्हें याद दिलाता था | देखिये इस प्रकार एंट्री एग्जिट का ऐसा था की कलाकारों को जब लगता था की कब कैसे किस तरफ से आना जाना है तब सब चल दिया करते थे | धीरे धीरे सब कलाकार खुद बा खुद से ही निर्णय ले लिया करते थे |

इस तरह से एक एक सीन की रिहर्सल शुरू हुयी थी | शुरवाती दौर में हबीब साहब किसी को भी कुछ नहीं बोलते थे जो जैसा चल रहा था वो करने देते थे, देखिये इसका मज़ा ये होता है की कलाकार को खूब मौका मिलता है अपनी पूरी कला को एक्स्प्लोर करने का |

इसके बाद में कलाकार को कुछ भी कहने करने के लिए भी नहीं रह जाता है और संतुष्टि रहती है की उनकी रचनात्मकता को मौका मिला| हलाकि जैसे जैसे रिहर्सल होती जाती है लगातार कोई न कोई सुझाव आता ही जाता है एक्टर्स की तरफ से भी, और हबीब साहब हमेशा स्वागत करते हैं और कहते हैं एक्टर्स से की करके दिखाओ अगर सही लगा तो रखेंगे दूसरी बात हबीब साहब के कई नाटकों में भी ऐसा हुआ है बहुत पुराने नाटकों में भी अगर कुछ नयी चीज़ जोड़ दी जाती है यानि की इम्प्रोयाजिशन के हिसाब से तो हबीब साहब कभी नहीं रोकते थे |

बस उन्हें ये लगना चाहिए की जो भी ऐड किआ जा रहा है वो अच्छा लगेगा और दर्शकों का एक भी सेकिंड बर्बाद नहीं होगा अगर हबीब साहब को कहीं भी लगा की दर्शक बोर हो रहा है तो हबीब साहब वो सीन या संवाद ही काट देते थे, क्यों की वो जानते थे की उसका असर पुरे नाटक में पड़ता है | हाँ तो मैं बात कर रहा था की हबीब तनवीर के नाटकों में कैसे बैक स्टेज का काम आता है |

<u>हैण्ड प्रॉप्स</u>

जब रिहर्सल शुरू हुयी तो पता ही नहीं चला की कब प्रॉप्स एक्टर्स के हाथों में आ जाते थे वो भी हबीब साहब स्वाभाविक तौर पे करने देते थे अगर विशेष उपयोग न हो तो शायद वो न पकड़ने दें प्रॉप्स लेकिन चूँकि एक्टर्स का वही की हाथों को कहाँ व्यस्त कर दें इस लिहाज से हबीब साहब ज़रूरत की सभी प्रॉप्स दे देते थे एक्टर्स खुद भी इतने होशियार थे अपने अपने हिसाब से धीरे धीरे प्रॉप्स पकड़ते जाते थे | सबसे बड़ी ये भी बात थी की हबीब साहब कहते थे की कोई भी प्रॉप्स एक्टर को ऐसी न दी जाये जिससे की उसके अभिनय पर बुरा असर पड़े या वो अपने अभिनय से भटक जाए या प्रॉप्स बोझ लगने लगें | और कहीं ऐसा होता था की प्रॉप्स का कोई भरी भरकम प्रयोग करना होता था तो हबीब साहब बाकायदा उसकी रिहर्सल अलग से लिया करते थे और उसे मंच पर एक्टर के रिहर्सल में सुविधा जनक स्थिति में ले जाने में मदद करते थे ये उनकी एक विशेष क्वालिटी थी की कभी भी वो ये नहीं लगने देते थे की अपनी डिजाइनिंग के चलते एक्टर्स पे ज्यादा ज़िम्मेदारी सौप दें, इसलिए उनके नाटकों में बैक स्टेज से ज्यादा अभिनय गीत संगीत पर ध्यान दिया जाता है | हैंड्स प्रॉप्स की ज़िम्मेदारी एक्टर्स की खुद की ही होती थी अगर कोई भी प्रॉप्स कुछ ख़राब होता है तो उसे खुद ही सही करना पड़ता है और उसकी देखभाल करनी होती है |

<u>प्रॉप्स अभिनय का ही हिस्सा</u>

जो मैंने देखा समझा हबीब साहब को की उनके नाटकों में प्रॉप्स अभिनय का ही हिस्सा रहा है | बेवजह वो एक्टर्स को कोई भी ऐसा काम नहीं सौप देते थे की जो एक्टर्स पे बाद में बोझ बने रिहर्सल के दौरान अगर कभी उन्हें लगता था की कोई एक्टर प्रॉप्स की वजह से अपने अभिनय से भटक रहा है तो वो उससे वो प्रॉप्स हटा कर उसे बिना प्रॉप्स के कुछ ऐसा कर देते थे की अभिनय में कोई कमी न आने पायें लेकिन अभिनय की गति से कोई समझौता नहीं करने देते थे की दर्शक सोचेंगे की जो अभिनेता जो चरित्र कर रहा है उन्हें लगेगा की वो चरित्र नहीं है वो हमेशा कहते थे की अगर आप अभिनय अच्छा करते हैं तो ये सब चीजें नगण्य हो जाती है |

कई बार प्रॉपर्टी देने भर से अगर कोई अभिनेता चरित्र लगने लगता था तो वो प्रॉप्स उसे दे देते थे| ये काम भी मूल रूप से वो अभिनेता पर ही छोड़ देते थे की अगर तुम्हें लगे की इसकी ज़रूरत है तो ही प्रयोग करना और अच्छे से प्रयोग करना और गर लगे की की ये तुम्हारे अभिनय में बाधा है तो हटा देना | ये जो सेफ ज़ोन होता था न हबीब तनवीर साहब का एक्टर्स को लेके वो बहुत काबिले तारीफ हुआ करता था इस तरह का प्रयोग हबीब साहब ने राजरक्त में किया जिसे की मैंने खुद ही देखा था | राम चन्द्र जी जो की रघुपति की भूमिका कर रहे थे उनके एक सीन में जो की मंदिर में हो रहा है रघुपति आरती कर रहा है और तभी उसे संवाद भी बोलने है शुरू में हुआ की रघुपति आरती ख़तम करता है फिर मंदिर में आये हुए अन्य श्रधान्लुओं से कुछ बात करता है लेकिन इसी दौरान उसके हाथ में एक पूजा करने का यन्त्र था जिसमे की हवन जैसा कुछ होता है यानिकी उसमे से धुआं निकलता है

चित्र- नाटक जिन लाहौर नहीं वेख्या वो जन्मया ही नहीं में मस्जिद के दृश्य को क़ुरान और दरी से स्थपित कर दिया गया/

[redacted]

चित्र- नाटक राजरक्त में रानी और उस बालक के बीच रखा हुआ मोढ़ा(प्रॉपर्टी) ये दृश्य राजमहल के अंदर का है जहाँ ये छोटा बालक रानी से मिलने जाता है लेकिन यहाँ हबीब साहब ने बजाय किसी भारी राजसी कुर्सी के सिर्फ एक मोढ़े का इस्तेमाल किया)

अब रघुपति बात करते करते उसे भी हाथ में लिए हैं तो उसके हाथ में उस मिटटी के बने बरतन की गर्माहट से जलन पहुँचने लगती है |

राम चन्द्र जी रिहर्सल में ऐसा करते थे हबीब साहब रोज़ देख रहे थे उन्हें लगा की शायद अभी संवाद सही से याद नहीं है इसलिए समय ज्यादा लग रहा है एक दिन वो टाइमिंग्स सही कर लेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ तो हबीब साहब ने कहा की राम उस बर्तन को मंदिर में ही रहने दो वही जलने दो उसे और तुम खाली हाथ आके भक्तों से बात करो कोई दिक्कत नहीं, ज़रूरी वो बर्तन नहीं ज़रूरी तुम्हारा अभिनय है | आगे से राम भाई यही करते थे तो इस प्रकार से नाटक का वो दृश्य अच्छा बन पड़ा था |

<u>हबीब तनवीर के नाटकों में वेशभूषा</u>

हबीब तनवीर के नाटकों में वेशभूषा बेशक बहुत ही महवपूर्ण रही है, ज्यादतर नाटक ग्रामीण परिवेश के हैं लोक कला

को लिए हुए गीत संगीत वाले हैं तो वेशभूषा ऐसी हैं की वो ही कई नाटकों में भी प्रयोग हो जाया करती है | जिन दिनों मोनिका मिश्र तनवीर जी जिन्हें मंडली के कलाकार माँ जी कह कर बुलाया करते थे जिंदा थीं तो बैक स्टेज की ज़मीदारी बखूबी निभाती थीं | नगीन तनवीर बताती हैं की सारी ज़िम्मेदारी अकेले उन्हीं ही होती थी बेशक उन दिनों के बाकि के अन्य अभिनेता उनकी मदद करते थे लेकिन मूल रूप से वेशभूषा समेत बैक स्टेज की सारी ज़िम्मेदारी माँ ही निभाया करती थीं |

चित्र- नाटक राजरक्त , वेशभूषा पहने उदय राम, हिमांशु, रविलाल

नया थिएटर मंडली के कलाकार "माँ जी के बारे में बताते हैं की माँ जी शुरू से ही अपना काम शुरू कर देती थी | यानि की नाटक शुरू हुआ इधर रिहर्सल और उधर माँ जी सोचने लगती थीं की किस किरदार को क्या वेशभूषा दी जाए कई बार हबीब साहब से डिस्कस भी शुरू कर देती थीं लेकिन हबीब साहब कहते थे की रुक जाओ अभी तो रिहर्सल ढंग से शुरू भी नहीं हुयी है तुम पहले ही अपने काम को लेके एक्टिव हो गयी |

माँ जी चूँकि अपने काम के प्रति बहुत ही ज्यदा संजीदा थीं इसलिए वो बिना देर लगाये कलाकारों से भी राय मशविरा लेना शुरू कर देती थी | कॉस्टयूम प्रॉप्स केस्तर पर क्या किया जाना चाहिए वो खुद ही उन्हें प्रॉप्स देना शुरू कर देती थीं | रिहर्सल के शुरुवाती दिनों से वेशभूषा के स्तर पर कलाकार स्वयं ही सब करते थे फिर माँ जी स्वयं ही कमान संभालती थी | एक एक सीन एक एक एक्शन उन्हें पूरा पता होता था की क्या करना है कैसे कलाकार को मदद करना है |

माँ जी खुद ही चूँकि थिएटर से थीं इसलिए भी वो सब कुछ अच्छे से जानती समझती थीं | उनका दूसरा ये भी था की सबसे पहले तो वो कोशिश ये करती थी की कम से कम में कैसे काम चलाया जाए जैसे की घरेलु कपड़ों में कैसे काम चल जाये ज्यदा सामान बाहर से न खरीदना पड़े उसके बाद भी अगर बात न बनें तभी वो समान बहार से खरीदती थी | इसके अलावा पुराने नाटकों की कॉस्टयूम से भी वो अक्सर काम चला लिया करती थी उसमे कुछ फेर बदल करके बिना उसक मूल रूप को नष्ट किये हुए ,

देखिये नाटक में ये बहुत ही महतवपूर्ण है ही की कैसे काम चला लेते हैं आप , कम से कम में क्यों की एक सीमित बजट के अंदर रह कर ही आप को काम करना होता है |

बहुत से नाटकों की वेशभूषा ऐसी भी होती थी जो सामान्य तौर पर नहीं मिल पाती थी आम बाज़ारों में तो उसके लिए जिस शहर नया थिएटर मंडली जाती थी नाटक करने उस शहर में शौपिंग की जाती थी| हबीब तनवीर के ज्यदातर नाटक छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं पर आधारित थे अब उनसे सम्बंधित अगर कोई वेशभूषा आभूषण नहीं मिल रहे हैं तो ये लोग फिर रायपुर बिलासपुर या छत्तीसगढ़ में जहाँ जहाँ भी जाना होता था वहां से ध्यान से सब समान लेके आते थे ताकि सही वक़्त पर काम आ सकें | ऐसे ही जब जब कोलकाता जाना होता था तब तब भी यही हाल हुआ करता था की चलो नाटकों से सम्बंधित प्रॉप्स आदि वहां से ले लिया जाया करता था वजह ये थी की वहां नाटक यानि थिएटर से सम्बंधित समान बहुत अच्छा मिल जाया करता है और अन्य स्थानों की तुलना में कोलकाता में नाटक से सम्बंधित सामग्री बहुत सस्ती है |

<u>हबीब तनवीर के नाटकों में सेट</u>

हबीब साहब के नाटकों में सबसे प्रमुख पक्ष अभिनय और उसके बाद गीत और संगीत होता था इसलिए बाकि मंच के परे से सम्बंधित तत्व बहुत भूमिका नहीं निभा पाते थे | सेट को लेके हबीब साहब बहुत साफ़ थे चूँकि नया थिएटर कंपनी पूरे विश्व समेत भारत वर्ष में भी घूम घूम कर बहुत शो करती थी तो कहाँ कहाँ सेट लेके जाएँ और सेट को लेके जाना उसका रख रखाव बहुत ही मुश्किल होता था लेकिन फिर भी मेरे समय में जो जो नाटक एक्टिव थे उनमे था चरनदास चोर,राजरक्त, आगरा बाज़ार, जिस लाहौर नहीं वेख्या वो जनम्य ही नहीं, सड़क थे | अब देखिये बड़ा सेट सिर्फ और सिर्फ आगरा बाज़ार का होता था उसके बाद का सेट आता था लाहौर नाटक इसके अलावा जितने भी नाटकों के सेट थे वो सब ठीक ठाक सेट थे मतलब ऐसे ही आसानी से कहीं भी लाये ले जाए जा सकें | आगरा बाज़ार के लिए ऐसा होता था की सेट के लिए ही ट्रक करना पड़ता था और जिस भी शहर नाटक 'आगरा बाज़ार' होता था वहां के लिए सेट वाले ट्रक की रवानगी कई दिनों पहले ही कर देनी पड़ती थी साथ ही नया थिएटर के कोई एक या दो कलाकार भी साथ जाते थे ताकि सेट की सुरक्षा और वहां सेट लगाने का काम शुरू किया जा सके | आगरा बाज़ार के सेट में ऐसा भी नहीं था की किसी भी शहर में तुरंत का तुरंत मैनज किया जा सके नहीं इसलिए अमूमन आयोजक कई बार आगरा बाज़ार करवाने से हिचकिचा भी जाते थे लेकिन जो नज़ीर के दीवाने थे जो इस नाटक के दीवाने थे उनके लिए ये कोई बड़ा काम नहीं होता था |

चित्र ***नाटक जिन लाहौर नहीं वेख्या वो जन्मया ही नहीं में हवेली का सेट***

हबीब तनवीर साहब फिर भी ये कोशिश करते थे की उनके नाटकों के सेट बहुत ही सीमित तौर पर रहें बिलकुल भी भारी भरकम न रहे जिस से सेट को कहीं भी लाने ले जाने में कोई परेशानी न हो | मूल रूप से उनका फोकस अभिनय पर होता था कारण ये था की वो जानते थे की बेवजह दर्शकों को सेट में उलझाने से या उसमे ताम झाम क्रिएट करनेसे कुछ नहीं होना है आफ्टर आल दर्शकों को याद रहता है अभिनेता का परफॉरमेंस और नाटक की कहानी गीत संगीत | लेकिन फिर भी उतना सेट तो रखते ही थे जिसके आधार पर अभिनेता को सीन में मदद मिले उसके चरित्र को समझने में मदद मिले और चरित्र निकल के आये उभर के आये | बहुत प्रमुखता से सेट को भारीभरकम हबीब तनवीर ने कभी जान बुझ कर नहीं बनाया हबीब साहब कहते थे की जिन के नाटकों में ये सब काम ज्यादा दिखने लगे तो समझना की नाटक कथानक कहानी अभिनेता या निर्देशन में कमज़ोर है इसलिए वो इन सब में दर्शकों को उलझा देना चाहता है ताकि किसी का ध्यान उधर से हटकर इधर भी आ सके | चूँकि हबीब साहब लोककलाकार लेके आये थे छत्तीसगढ़ से और उनके साथ ही काम शुरू किया था तो उस हिसाब से भी ये ज़रूरी था क्यों की लोक कला में तो भारी भरकम कोई सेट तो होता नहीं था सामान्य तौर पर कम होते थे लोक कलाकार हमेशा से अपनी परफॉरमेंस पर ज्यादा ध्यान देते थे वजह ये भी थी की सीमित साधनों में सेट कहाँ से लायेंगे वे इसलिए वो अपने अभिनय पक्ष को ही मजबूत रखा करते थे |

नया थिएटर के वरिष्ठ अभिनेता अनूप रंजन पांडे जी कहते हैं-

नया थिएटर नाटक कम्पनी एक मूविंग थिएटर कंपनी रही है इसलिए हबीब साहब ने कभी भी कोई ऐसी चीज़ आड़े नहीं आने दी की जिसका असर उनके नाटकों के प्रदर्शन पर पड़े | क्यों की हबीब तनवीर ने जब नाटक शुरू किये थे तब उन दिनों में लोक कलाकारों द्वारा भी गॉव आदि में बहुत से लोककला लोक नाट्य के प्रदर्शन हुआ करते थे | तो उन्होंने भी अपने नाटकों को ऐसा रखा की आसानी से यहाँ वह मूव करवाया जा सके | हबीब साहब के नाटकों में वैसे तो ऑन स्टेज बैक स्टेज जैसा कुछ भी नहीं है जो भी है वो सब ऑन स्टेज ही हैं | नाटक चलते चलते ही सीन बदल जाता है | एक सीन में ही दूसरा सीन आके जुड़ जाता है , एक सीन के होते होते उसी के पीछे अगला सेट तैयार हो जाया करता है | ऐसा हबीब तनवीर के सभी नाटकों में अमूमन देखने को मिलता है |

अनूप जी कहते हैं की हबीब साहब के अभिनेता चूँकि मूल रूप से लोक से निकल के आये थे तो सभी कलाकार स्वयं भी तकनीकी रूप से प्रशिक्षित नहीं थे दूसरी बात हबीब साहब खुद ही कलाकार पर कभी भी तकनीकी बोझ नहीं पड़ने देते थे क्यूंकि तकनीकी बोझ होने पर फिर कलाकार इसमें उलझ जाता है और उसका ध्यान अपनी परफॉरमेंस से ज्यादा तकनीकी चीजों पर लगता है इसलिए हबीब साहब हमेशा ऐसा करते थे की कलाकार अपना काम करे और तकनीक उसका सहयोग करे तकनीककलाकार के पीछे रहे न की अभिनेता तकनीकी के पीछे घुमे |

बहुत बार तो ऐसा भी हुआ है की कहीं कोई सेट नहीं मिला कोई लाइट नहीं है सिर्फ हैलोजन लाइट मिल गयी तो बस उसी में नाटक कर दिया |

कोई सेट नहीं है तो तो भी नाटक कर दिया, लेकिन नया थिएटर के कलाकारों में कांवेंसिंग पॉवर इतनी होती है की दर्शक मंच के सेट लाइट साज सज्जा सब भूल जाते हैं वे कहानी कलाकारों के प्रदर्शन गीत संगीत के आनंद में डूब जाते हैं | हबीब साहब की टीम में कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं रहा है परमानेंट कलाकार के तौर पर जिसकी समझ सेट, लाइट को लेके बहुत विकसित रही हो दरअसल उन्हें चाहिए ही नहीं होता था उन्हें वो ही आदमी चाहिए होता था जो की कलाकार हो |

हबीब साहब की खासियत ये भी थी की अगर कहीं उन्हें बढ़िया टेक्नीशियन मिल जाता था बढ़िया ऑडिटोरियम मिल जाता था तो हबीब साहब टेक्निकल रिहर्सल कर लेते थे और गर टेक्निशियन समझ जाता था हबीब साहब के कांसेप्ट को तो हबीब साहब उसका भी भरपूर प्रयोग करते थे लेकिन इन सबके बीच ये ज़रूर इल्म रहता था की किसी भी कलाकार को कोई दिक्कत न हो शो की गति में कोई अवरोध उत्पन्न न होने पाए | सब कलाकारों को नाटक के मंचन से पहले कह भी दते थे की लाइट आदि को लेके तुम लोगों को सोचने की ज़रूरत नहीं है तुम लोग बस अपना काम करते रहना | वही बात की तकनीक सहयोग करेगी कलाकार को, कलाकार नहीं भागेगा तकनीकी के पीछे |

उनके सभी नाटक में प्रकाश ही भूमिका इतनी ही हुआ करती थी की बस मंच पर क्या हो रहा है दर्शक वो देखते रहें हबीब साहब कभी तकनीकी में उलझा कर दर्शक को बोर नहीं करते थे वो एक अच्छे कहानीकार, नाटककार संगीतकार और अभिनेता थे इसलिए ये सब तत्वों का मिश्रण उनके निर्देशन में साफ़ साफ़ झलकता था |

अनूप रंजन पांडे बताते हैं की "कोलकाता में उषा गांगुली जी की नाटक मंडली के साथ संयुक्त प्रोडक्शन मे तैयार हो रहे नाटक विसर्जन में लाइट डिजाइनिंग को लेके देश के मशहूर लाइट डिज़ाइनर व वरिष्ठ रंगकर्मी तापस सेन दादा के साथ नाटक के मंचन के आखिरी दिनों तक बहस चलती रही नाटक की डिजाइनिंग को लेके | हबीब तनवीर साहब चाहते थे की एक सीन में जिसमे राजा को निर्वासन दिया जाता है उसमे सय्क्लोरमा पर ही लाइट से कुछ ऐसा बनाया जाए की निर्वासन के समय जाते हुए राजा की शैडो दूर तक जाती हुयी दिखाई दे जबकी तापस दा चाहते थे की मंच का पर्दा ब्लैक रहे जिससे की लाइट डिजाइनिंग खूब निखर के आये इस बात को लेके कई बार ऐसा हुआ की बात चीत विचार विमर्श चलता रहा था लेकिन हबीब साहब आखिर तक नहीं माने और तापस दा को फिर लाइट वैसे ही करनी पड़ी जैसा की निर्देशक हबीब तनवीर चाहते थे, इसमें आखिर में तापस दा भी समझ गए थे की हबीब साहब किस नज़र से ये कह रहे थे निर्देशन के पॉइंट ऑफ़ व्यू से वो सीन बहुत ही महत्वपूर्ण था क्यों की राजा जो की अपना राज्य छोड़ कर जा रहा है अब राज्य की जनता और दर्शक के सामने ये सवाल है की राजा के जाने के बाद अब राज्य का क्या होगा कौन इसी चलाएगा ? तो वो एक बड़ा सवाल था जो हबीब साहब दर्शकों के दिलों में छोड़ना चाहते थे |

नया थिएटर में वर्तमान में लाइट व् सेट की ज़िम्मेदारी सँभालने वाले धन्नू लाल सिन्हा कहते हैं की " हबीब तनवीर साहब की नाटक मंडली में तकनीकी को लेके कोई बाधा नहीं होती थी वो अपने नाटकों की डिजाइनिंग ही ऐसी रखते थे की कोई भी आदमी एक दो रिहर्सल के बाद उनके नाटकों की लाइट को आपरेट कर सकता था | फिर भी उनके कुछ निर्देश साफ़ होते थे जिसे लाइट ओपरेट करने वाले को मानना ही होता था सेट को लेके धन्नू लाल सिन्हा कहते हैं की हबीब साहब का एक ही ऐसा नाटक है जिसमे सबसे भारी भरकम सेट था वो था आगरा बाज़ार इसके अलावा थोडा सेट नाटक लाहौर का था इसके अलावा तो कोई भी ऐसा नाटक नहीं है जिसमे की भारी भरकम सेट हो | बल्कि लाहौर नाटक का सेट भी हम लोग आयोजको को बता देते थे की एक प्लाई चाहिए एक और मोती प्लाई चहिये कुछ बॉक्स चाहिए प्लेटफार्म चाहिए होता था तो ये तो मैनेज हो जाता था बस सिर्फ आगरा बाज़ार नाटक ऐसा नाटक था की जिसमे सेट नया थिएटर का अपना सेट होता था वो ही हमें लेके जाना पड़ता था क्यों की वो संभव नहीं था की आयोजक कम समय में बनवा सकें | आगरा बाज़ार का सेट इतना खूबसुरत सेट है की मंच पर लगता है की जैसे पूरे आगरा बाज़ार की बाज़ार ही क्रिएट हो गयी हो बाकायदा किताब की दुकान, पतंग की दुकान, कोठे, और कोठे के नीचे बने बाज़ार में बैठे अन्य दुकानदार | मंच पर ही कुछ प्लेटफार्म के ज़रिये हमें गली मोड़ सब दिख जाते हैं उसी बीच में कडकी वाला, लडडू वाला , कान साफ़ करने वाला बन्दर नचाने वाला भालू नचाने वाला सब आते हैं तो ये भरी भरकम सेट था लेकिन ये सेट उस समय के आगरा को क्रिएट करने के लिए ज़रूरी था क्यों की लगातार मंच के एक तरफ किताब वाला है तो दूसरी तरफ पतंग वाला है औ बीच में जो जगह बचती है समझिये वही मंच है वही नाटक खेला जाना है, वही सब घटनाएं होनी हैं |

धन्नू लाल सिन्हा बताते हैं की " नाटक बहादुर कलारिन में, सेट पर एक कुआँ होता है कहानी में उस कुएं का बहुत महतवपूर्ण काम है क्यों कलारिन अपने बेटे को कुंएं में धकेल देती है और फिर खुद भी उसी कुंए में कूदकर अपनी जान दे देती है अब इस नाटक में सेट का बहुँत बड़ा योगदान था क्यों की कहानी में ये कुआँ एक पात्र की तरह ही काम कर रहा है तो इस पर हबीब साहब का विशेष ध्यान रहता था |

नया थिएटर के वर्तमान निदेशक रामचंद्र सिंह भी कहते हैं की-

हबीब साहब के नाटक में बैक स्टेज वर्क की भूमिका बिलकुल नगण्य ही हुआ करती थी | बैक स्टेज भी एक तरह के पात्र ही होते थे, अब गौर से देखें तो लाहौर में सेट क्या है कभी वो सेट हवेली बन जाता है कभी वही सेट चाय की दुकान बन जाता है वही सेट मौलवी के लिए मस्जिद बन जाता है तो ये हुनर हबीब साहब के नाटकों में हुआ करता था हबीब साहब के नाटकों में कभी सेट नहीं बदलता था मूल रूप से सेट वही होता था बस उस सेट में मामूली से परिवर्तन करके ही काम चल जाता था जैसे की कभी मोड़े आ गए कभी कुर्सी आ गयी कभी कुछ मामूली फेरबदल हो गया | ये अनुभव आप नाटक राजरक्त में देखिये ये अनुभव आप लाहौर में देखिये, बहुत मामूली से परिवर्तन से ही सीन बदल जाता है |

नाटक सड़क में सिर्फ एक जज की कुर्सी रख देने भर से वो सेट अदालत बन जाता है, बाकि टाइम में वो अन्य जगहों का आभास देता है |

<u>नाटक मिटटी की गाड़ी में हबीब तनवीर साहब ने एक सेट तैयार किया जो की गोल चबूतरा था बस |</u>

मिटटी की गाड़ी नाटक की कहानी चबूतरे के इर्द गिर्द ही चल रही है | ये चबूतरा कभी राजमहल बन जाता है तो कभी बसंत सेना का घर बन जाता है | कभी चारुदत का घर बन जाता है कभी बाज़ार का लुक देता है | स्टेज बिलकुल ही साधारण है है लेकिन इस तरह से तैयार किया गया है की पूरे गोल चबूतरे में आप नाटक देखते हैं | जिस प्रकार आप लोक रंगमंच में देखते हैं की वहीँ का वहीँ सब होता जाता है कलाकार एग्जिट नहीं करता है वैसा ही | जैसे मंच पर नाटक हो रहा है सीन चल रहा है और सीन बदलते ही एक्टर मंच पर ही एक चक्कर लगा लेता है और वो कहता है की मैं बाज़ार घूम के आ गया इसका अर्थ यही है की एक चक्कर मात्र से दिशा स्थान बदल जाता है |

टाइम स्पेस का बेहतरीन प्रयोग किया हुआ है इस नाटक में , हबीब साहब अपने प्रत्येक नाटक में इस बात का विशेष धयन रखते थे वो कहते थे की दर्शक का एक भी सेकंड बर्बाद होना नहीं चाहिए | जहाँ भी लगे की दर्शक ने अंगड़ाई ले ली है समझिये की वहां आप का नाटक कमज़ोर है | ये सच है अनुभवों से ये बात मुझे बाद में समझ आई | हबीब साहब कभी भी नाटकों को अनावश्यक खीचते नहीं थे उनका कहना था की संवाद बहुत लम्बे नहीं होने चाहिए संवाद छोटे हों और बीच बीच में दूसरे को-एक्टर्स यानि की चरित्रों की भी बात आनी चाहिए |

नाटक चरनदास चोर

चरनदास चोर में देखिये सेट के नाम पर एक तख़्त है, उसके पीछे की तरफ एक पेड़ लगा हुआ है अब वो तख़्त और पेड़ कभी गुरु बाबा के लिए मंदिर बन जाते हैं तो कभी वो तख़्त रानी के लिए उसका महल बन जाते हैं तो कभी सैनिकों के लिए खजाना रखने वाला भंडार बन जाते हैं | अंत के सीन में उसी मंच पर चरणदास चोर की हत्या होती हैतो ये हुनर देखिये हबीब साहब का की सेट के नाम पर एक छोटा सा तख़्त है बांस है जिस पर एक पेड़ की डाली लगा दी जाती है और वही पेड़ बना जाता है | इस प्रकार हबीब साहब के नाटक में सेट होता है |

चित्र *नाटक चरणदास चोर में बाएं से हबीब तनवीर, पूनम तिवारी, नगीन तनवीर*

नाटक राजरक्त

नाटक राजरक्त के सेट में यही सब देखा जा सकता है | राजरक्त में एक महल है महल को दिखने या स्थापित करने के लिए किया ये गया है की हबीब साहब ने मात्र एक जालीदार रंगीन पर्दा जिसमे नीचे के हिस्से में गोटी लगी हुयी हैं एक चमकदार सा किनारा लगा हुआ है मंच पर जब उस पर लाइट पड़ती है तो तो वो चमकता है ,इसके साथ ही मंच पर मात्र दो मोड़े हैं जिन पर भी सोने का सा आभास देती हुयी किनारी लगी हुई है और उस मोड़े पर एक गद्दे वाली सीट है | अब इस मोड़े को देख कर ये आभास हो जाता है की ये राजसी प्रतीक है | राजा के दरबार के सीन में जब राजा आता है या उसका भाई और रानी आते हैं तो दोनों ही उस गद्दे पर बैठते हैं और बातोंही बातों में उस जालीदार परदे को स्पर्श कर लेते हैं अर्थात महल का एक फील देने के लिए |

वहीँ अन्य दृश्य में जब मंदिर का सीन आता है तो मंदिर पूरी तरह से ऐसा बनाया गया है की आसानी से लगाया निकाला जा सके | महज एक मूर्ति है जिसे रोकने के लिए और मंदिर की दीवारों को आभास देने के लिए उसे लोहे के सीखचों को नत बोल्ट से जोड़ा जाता है और फिर उसके चारों तरफ बॉस की खपचियों का अच्छा सा प्रयोग किया जाता है और फिर उसे कपडे के परदे से घेर दिया जाता है इसके अलावा एक और महत्पूर्ण बात ये थी की मंदिर के ही आस पास को वो जो जड़ें होती थीं था तो लटकती रहती हैं जैसे ही बरगद के पेड़ में होती हैं वैसी ही जड़ें इकट्ठा करके उसे मंदिर पर लटका दिया जाता है जिससे की ये आभास हो की मंदिर के आस पास पेड़ हैं और पेड़ की जड़ें

मंदिर में लटक के आ रही है वो देखने में बहुत ही नेचुरल लगता है | फिर मंदिर में फल आदि चढ़ाये जाते हैं | सेट के नाम पर मंदिर में घंटे घड़ियाल शंख आदि भी रख दिए जाते हैं |

एक सीन में जिसमे रघुपति छुपता है अर्थात वो मंदिर से निकल के आता है उसे मंदिर के पीछे की ओर स्थापित कर दिया गया है और वो ऐसा प्रतीत होता है की रघुपति का शयन कक्ष है तो ये है हबीब साहब की डिजाइनिंग |

चित्र- नाटक राजरक्त के मंदिर का दृश्य, मंदिर दिखाने के लिए सिर्फ एक मूर्ति, आगे लगे दो परदे, मूर्ति का बेस, दृश्य में रघुपति बने रामचंद्र सिंह, नक्षत्र रे योगेश तिवारी, सेनापति मनहरण

हबीब तनवीर मुख्य रूप से सेट मिटटी की गाड़ी, आगरा बाज़ार, जिस लाहौर नहीं वेख्या वो जनम्य ही नहीं, राज रक्त में प्रयोग होता था | फिर भी सेट के इस क्रम में हम आगे डिटेल्स में जायेंगे और क्रम से जानेंगे |

दूसरी बात ये है की हबीब तनवीर ब्रेख्त को समझते थे उन्हें मानते थे बर्लिन में हबीब तनवीर ने ब्रेख्त का नाटक कोकेशियन चाक सर्किल देखा था और उस नाटक से हबीब साहब बहुत ही मुतासिर हुए थे | इसके अलावा और भी नाटक देखे थे बर्लिन में उन्होंने ब्रेख्त के जिसका असर उनके पड़ा था | उन्होंने नाटक की डिजाइनिंग देखी और बहुत कुछ सीखा |

<u>मेकअप</u>

हबीब साहब के नाटकों में मेकअप के लिए तो नाम मात्र की ही जगह रही है उनके किसी नाटक में विशेष तौर पर कोई मेकअप नहीं होता था लेकिन कुछ नाटकों में जैसे लाहौर में या पौराणिक कथाओं वाले नाटकों में सजने संवरने के लिए जिस किसी भी खास किस्म की ज़रूरत होती थी उतना ही मेकअप होता था लेकिन अमूमन हबीब साहब के नाटकों में मेकअप के लिए कोई जगह नहीं होती थी | महिला पात्र अगर चाहती थीं तो वे अपना मेकअप खुद ही कर लिया करती थी इसके लिए किसी को भी विशेष रूप से सजने संवरने की ज़रूरत नहीं होती थी लेकिन चरित्र को अच्छे से समझने के लिए मेकअप की भी ज़रूरत होती थी | कुछ नाटकों में जहाँ दाढ़ी मूंछे लगनी होती थी वहीं मेकअप की ज़रूरत पड़ती थी | आदिवासी जितने भी महिला कलाकर हैं मंडली में सभी को अपना अपना मेकअप सजावट आदि पता है और उन्हें किसी भी प्रकार की विशेष आवश्कता नहीं पड़ती है वो अपने हिसाब से सब तैयार कर लेती हैं | ऐसे नाटकों में जो भी महिलाएं हैं जो की शहरी हैं वो भी भी अपना मेकअप खुद ही कर लेती हैं उन्हें भी किसी भी तरह की ज़रूरत नहीं पड़ती है पुरुष ज़्यादातर बिना मेकअप के ही रहते हैं उनके हर नाटक में अब कोई नहीं रह जाता है

जिसे मेकअप की ज़रूरत पड़ती हो |

चित्र- नया थिएटर के कलाकार मेकअप करते हुए

नया थिएटर के प्रत्येक कलाकर की खुद की ज़िम्मेदारी होती थी की वो खुद ही अपना मेक अप करें |

नाटक चरणदास चोर में देखिये गुरु दक्षिणा सीन में जब बाबा आता है वो धुनी जमाता है वो अपना प्रवचन देता है उसके चेले आते हैं बैठते हैं अब वो जो अभिनेता इसे करता है उनका नाम है मनहरण |

मनहरण की खुद की ज़िम्मेदारी होती थी की वो खुद ही जाके अपने माथे पे तिलक लगाये खुद ही अपन हाथों पर माथे पे चन्दन से जो भी आकृति बनाना है बनाये इसके लिए उसकी मदद अन्य कलाकार कर देते थे लेकिन इस काम के लिए बाहर से कोई मेकअप नहीं बुलाया जाता था |

और ऐसा ही अन्य सीन में भी है जिसमे की मंदिर का सीन है जहाँ आरती हो रही है और वहां चरणदास चोर आता है और फिर उसके पीछे पुलिस वाला दौड़ता आता है अब उस सीन में दिखिये की पुजारी का रोल करने वाले अभिनेता नेता धन्नू को खुद ही अपना मेकअप करना होता है | इसी क्रम में राज पुरोहित जो की रानी के साथ आता है इसके अलावा किसी अन्य चरित्र का मेकअप नहीं होता था | रानी और दासी दो महिला पात्रों के लिए स्वयं ही वे दोनों कलाकार अपना मेकअप कर लेती थीं |

इसी प्रकार राजरक्त में भी रामचंद्र सिंह को पुरोहित बनने के लिए थोडा तिलक आदि की जरूरत पड़ती थी बाकि सभी अभिनेता खुद ही तैयार होते थे और किसी का भी मेकअप नहीं होता था |

लाहौर नाटक की बात करें तो मौलाना और पहलवान दो ऐसे चरित्र हैं जिनको दाढ़ी लगनी होती थी तो ये लोग भी अपनी दाढ़ी अपने को-एक्टर्स से लगवा लिया करते थे | भोपाल से बाहर कहीं शो होने पर अगर आयोजक की तरफ से मेक अप की व्यवस्था हो जाये तो मेकअप हो जाता था अन्यथा कोई बात नहीं, आगरा बाज़ार में भी यही था की लड़कियां अपना मेकअप खुद कर लिया करती थीं बाकि के किरदारों का कोई मेक अप होता ही नहीं था |

<u>लाइटिंग</u>

हबीब तनवीर के नाटकों में लाइटिंग का बस उतना ही योगदान है जितना की किसी मंच पर लाइट हों और दर्शक देख सकें की मंच पर होने वाला नाटक दिखाई दे रहा है| मेरे सामने प्रस्तुत हुए किसी भी नाटक में लाइट को लेके ऐसा तो कोई भी बहुत स्पेशल इफ़ेक्ट नहीं देखना को मिला कभी| लाइट की ज़िम्मेदारी सँभालने वाले धन्नू लाल सिन्हा कहते हैं की हबीब साहब चूँकि नाटकों की बहुत टेक्निकल पक्ष को बहुत ज्यादा गंभीरता से नहीं लेते थे इसलिए नाटकों में लाइटिंग का कोई बहुत बड़ा प्रयोग उन्होंने नहीं किया | बेशक नाटक में शुरू में तैयारी के समय बहुत सी डिजाइनिंग होती थी जहाँ जहाँ लगता था की स्पेशल इफ़ेक्ट डाले जा सकते हैं, ज़रूर डाले जाते थे लेकिन उस सब में एक सुविधा ये भी हुआ करती थी अगर किसी हाल में मंच पर कोई ऐसी सुविधा न मिले तो भी कोई दिक्कत नहीं होगी उस से नाटक की गति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा |

शुरू में हबीब साहब टेक्निकल पक्ष को भी बहुत मजबूत रखना चाहते थे प्रयोग किया भी था लेकिन फिर हुआ ये की आखिर कब तक क्यों की सभी कलाकार तो लोक कलाकार थे सब अभिनय गीत संगीत के सिवा कुछ भी नहीं जानते थे ऐसे भी ज्याद टेक्निकल पक्ष को संभाला पाना अमुश्किल हुआ करता था लेकिन फिर भी आगे के क्रम में आप देखेंगे की नाटक में क्या क्या प्रधान था उस पर चर्चा होगी | जिसमे ये सब डिटेल्स जान ने को मिलेंगे | कुछ फिर भी हबीब साहब मोटे मोटे तौर पर ज़रूर बता देते थे की कैसे नाटक की लाइटिंग को ध्यान में रखते हुए काम करना है या वे क्या चाहते हैं |

बहुत प्रधानता उनके नाटकोंमें लाइटिंग की नहीं होती थी | जब से धन्नू लाल सिन्हा जी नया थिएटर में आये तब से ये ही लाइट डिजाइनिंग से लेकर लाइट ऑपरेशन तक का काम देख रहे है, किसी भी आयोजक को लाइट की आवश्यकता बतानी हो | ऐसे ही कई अवसरों पर ऐसा भी हुआ है की वहां कोई लाइट नहीं मिल सकी है तो वह मात्र हैलोजन की लाइट में भी नाटक खेला गया है जहाँ मंच पर अच्छी लाइट मिल गयी है वहां पूरी लाइट्स का अच्छा प्रयोग करके भी नाटक खेला गया है | हाँ लेकिन हबीब साहब के एक नाटक देख रहे हैं नैन में एक स्पेशल इफ़ेक्ट प्रयोग होता था जिसमे की उसकी

जहरीली हवा में स्पेशल लाइट पे काम हुआ था रिकार्डेड म्यूजिक का प्रयोग हुआ था लेकिन हबीब साहब ने उस नाटक को असफल भी माना था | लास्ट बार २००३ में हुआ था उसके बाद नाटक बंद कर दिया था |

राज रक्त में कोई विशेष लाइट नहीं जनरल लाइट में पूरा नाटक चलता है बस मंदिर में एक लाइट रहती है जो देवी की मूर्ति पर पड़ती है | नाटक चरणदास चोर में एक लाइट उस समय विशेष तौर पे आती हैं जब चोर को मार दिया जाता है इसके अलावा कोई लाइट कहीं पर भी नहीं है | नाटक आगरा बाज़ार में तो पूरी जनरल लाइट है | धन्नू बताते हैं मिटटी की गाड़ी, देख रहे हैं नैन, हिरमा की अमर कहानी, कामदेव का अपना बसंत ऋतु का सपना जैसे नाटकों में ही लाइट का कोई विशेष प्रयोग नहीं है सभी नाटक मूल रूप से सहजता से खेले जाते हैं |

लाइट डिजाईन के स्तर पर ज़हरीली हवा में एअरपोर्ट के सीन को दिखने के लिए लाइट का प्रयोग किया स्मोक का भी प्रयोग किआ गया था | मिटटी की गाड़ी में बगीचे को दिखाने के लिए लाइटिंग का प्रयोग करते थे इसके अलवा कोई विशेष प्रयोग नही था | शुरुवाती दिनों में मिटटी की गाड़ी में डिब्बे से ही लाइट में बल्ब लगा कर काम चलते थे फिर उसे बंद कर देते फिर खोल देते इस प्रकार लाइट के स्टार पर ऐसे फेड इन फेड आउट किया गया था |

नाटक 'देख रेह हैं नैन में' आँख दिखाने के लिए स्पेशल लाइट प्रयोग होती थी इस माहौल को समझने के लिए चैतराम जी की आँखों को 'पथराई आँख'दिखाने के लिए से देखने से पूरी सजा अपने ऊपर ले लेते हैं | विराट दीपक तिवारी करते थे, आँख को ही स्पॉट में दिखाने के लिएप्रयोग की जाती थी स्पेशल लाइट | जबकि शरीर का बाकी का कोई भी अंग नहीं दिखाई देता था | ज्यदातर सभी नाटकों में जनरल लाइट का प्रयोग होता है इसके अलावा कभी कभी नाटकों में प्रोफाइल पर, फ्रिजन्ल, पार बीम, बीम शार्प, बेबी स्पॉट है, प्रयोग होती हैं |

<u>और अंत में</u>

इस प्रोजेक्ट के अंत में बस यही कहना चाहता हूँ हबीब साहब और उनके रंगमंच पर अध्ययन करना बहुत ही विस्तृत काम है | हबीब तनवीर के नाटकों में बैक स्टेज की भूमिका के अध्ययन के लिए मैंने कई माध्यमों का प्रयोग किया है नया थिएटर के जो जो कलाकार उपलब्ध हो सके उनसे बात की है उनके अनुभव भी साझा किये हैं | उन्होंने किस नज़र से हबीब साहब के काम को देखा समझा और परखा है जिसका जैसा अनुभव रहा मैंने वो अनुभव यहाँ अपन प्रोजेक्ट के तहत साझा किया है | सभी कलाकारों का सहयोग रहा है मेरे इस प्रोजेक्ट में | इन सभी कलाकारों से मिलकर इनके काम को देख कर हबीब साहब की विरासत का अंदाज़ा होता है की हबीब साहब कितना महान काम करके गए हैं किन किन रास्तों से गुज़रे हैं कैसी परिस्थितियों से होकर गुज़रे हैं कैसे नया थिएटर के सभी कलाकारों को अपने मूल धरातल अपने मूल स्वाभाव जो वो समाज के सामने कहना चाहते थे जिस आधार पर वो समाज को कुछ आइना दिखाना चाहते थे उस से कुछ कहना चाहते थे वो उन्होंने किया | बेशक जिस दौर में हबीब साहब ने काम शुरू किया वो दौर चुनोतियों का दौर था कठिन दौर था साधन संसाधन नहीं थे लेकिन हबीब साहब ने अपनी तपस्या अनवरत जारी रखी | अपने प्रोजेक्ट के तहत मंच के परे किस तरह काम किया कैसे किसी भी काम को कभी बाधा

नहीं बनने दिया और कैसे कलाकारों की भूमिका और प्रदर्शन को सर्वोपरि मान कर काम किया वो सब यहाँ लिखने की कोशिश की है |

'धन्यवाद'